

class 12th

sub hindi

date 22/4/20

learn and write in fair
notebook

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

कविता के साथ

1. कविता एक ओर जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ—विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है?

उत्तर जग-जीवन का भार लेने से कवि का अभिप्राय यह है कि वह सांसारिक दायित्वों का निर्वाह कर रहा है। आम व्यक्ति से वह अलग नहीं है तथा सुख-दुख, हानि-लाभ आदि को झेलते हुए अपनी यात्रा पूरी कर रहा है। दूसरी तरफ कवि कहता है कि वह कभी संसार की तरफ ध्यान नहीं देता। यहाँ कवि सांसारिक दायित्वों की अनदेखी की बात नहीं करता। वह संसार की निरर्थक बातों पर ध्यान न देकर केवल प्रेम पर केंद्रित रहता है। आम व्यक्ति सामाजिक बाधाओं से डरकर कुछ नहीं कर पाता। कवि सांसारिक बाधाओं की परवाह नहीं करता। अतः इन दोनों पंक्तियों के अपने निहितार्थ हैं। ये एक-दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं।

2. जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं—कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा? [CBSE (Outside) 2010]

उत्तर नादान यानी मूर्ख व्यक्ति सांसारिक मायाजाल में उलझ जाता है। मनुष्य इस मायाजाल को निरर्थक मानते हुए भी इसी के चक्कर में फँसा रहता है। संसार असत्य है। मनुष्य इसे सत्य मानने की नादानी कर बैठता है और मोक्ष के लक्ष्य को भूलकर संग्रहवृत्ति में पड़ जाता है। इसके विपरीत कुछ ज्ञानी लोग भी समाज में रहते हैं जो मोक्ष के लक्ष्य को नहीं भूलते हैं। अर्थात् संसार में हर तरह के लोग रहते हैं।

3. मैं और, और जग और कहाँ का नाता-पंक्ति में और शब्द की विशेषता बताइए।

उत्तर यहाँ 'और' शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है। अतः यहाँ यमक अलंकार है। पहले 'और' में कवि स्वयं को आम व्यक्ति से अलग बताता है। वह आम आदमी की तरह भौतिक चीजों के संग्रह में नहीं पड़ता। दूसरे 'और' के प्रयोग में संसार की विशिष्टता को बताया गया। संसार में आम व्यक्ति सांसारिक सुख-सुविधाओं को अंतिम लक्ष्य मानता है। यह प्रवृत्ति कवि की विचारधारा से अलग है। तीसरे 'और' का प्रयोग संसार और कवि में किसी तरह के संबंध को नहीं दर्शाने के लिए किया गया है।

4. शीतल वाणी में आग-के होने का क्या अभिप्राय है?

अथवा

'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ' इस कथन से कवि का क्या आशय है?

[CBSE (Outside) 2008 (C); (Delhi) 2011; (Foreign) 2014]

अथवा

'आत्मपरिचय' में कवि का यह कथन—'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ' का विरोधाभास स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कवि ने यहाँ विरोधाभास अलंकार का प्रयोग किया है। कवि की वाणी यद्यपि शीतल है, परंतु उसके मन में विद्रोह, असंतोष का भाव प्रबल है। वह समाज की व्यवस्था से संतुष्ट नहीं है। वह प्रेम-रहित संसार को अस्वीकार करता है। अतः अपनी वाणी के माध्यम से अपनी असंतुष्टि को व्यक्त करता है। वह अपने कवित्व धर्म को ईमानदारी से निभाते हुए लोगों को जागृत कर रहा है।

5. बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?

उत्तर

पक्षी दिन भर भोजन की तलाश में भटकते हैं। उनके बच्चे घोंसलों में माता-पिता की राह देखते रहते हैं कि माता-पिता उनके लिए दाना लाएँगे और उनका पेट भरेंगे। वे माँ-बाप के स्नेहिल स्पर्श पाने के लिए प्रतीक्षा करते हैं। छोटे बच्चों को माता-पिता का स्पर्श व उनकी गोद में बैठना, उनका प्रेम-प्रदर्शन भी असीम आनंद देता है। इन सबकी पूर्ति के लिए वे नीड़ों से झाँकते हैं।

[CBSE (Outside) 2008]

6. दिन जल्दी-जल्दी ढलता है—की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर

‘दिन जल्दी-जल्दी ढलता है’—की आवृत्ति से यह प्रकट होता है कि लक्ष्य की तरफ बढ़ते मनुष्य को समय बीतने का पता नहीं चलता। पथिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आतुर होता है। इस पंक्ति की आवृत्ति समय के निरंतर चलायमान प्रवृत्ति को भी बताती है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। अतः समय के साथ स्वयं को समायोजित करना प्राणियों के लिए आवश्यक है।

दिन के आसपास